प्रथम परीक्षा
विषय = हिन्दी
कक्षा = 11

आन्सर शीट
PAGE NO.:
DATE: / /

29/30

विभाग - A

(1) मारने दौड़ते हैं।

* एक एक वाक्य में

(2) थोड़ी-सी टीस और थोड़ी-सी मिठास

* दो-तीन वाक्यों में

(3) कबीर कहते हैं कि बाह्य दिखावों में विश्वास करनेवाले लोग पीपल के वृक्ष और पत्थर (मूर्ति) की पूजा करते हैं। वे तीर्थ, व्रत में अपना समय बरबाद करते हैं। पर आत्मज्ञान के बारे में इन्हें कोई जानकारी नहीं है।

* पाँच-छ वाक्यों में

(4) कबीर न हिन्दुओं से प्रसन्न हैं, न मुसलमानों से। वे कहते हैं कि हिन्दु राम को अपना मानकर उन्हें भगवान मानते हैं। मुसलमान रहमान को अपना सर्वस्व मानते हैं। इस बात को लेकर वे आपस में झगड़ते हैं। —— वे यह नहीं समझते कि राम और रहमान दोनों एक ही हैं। परन्तु सच्चाई जानने की कोई कोशिश नहीं करता। इस प्रकार हिन्दु और मुसलमान दोनों धर्म की स्थिति से अज्ञान हैं।

(5) हिंसा मनुष्य की स्वाभाविक वृत्ति नहीं है। वह क्षणिक आवेश है। सामान्य रूप से मनुष्य अहिंसक रहता है। समाज में रहने के कारण उसके व्यवहार में अहिंसा की प्रधानता होती है। प्रेम, सहयोग

PAGE NO.:
DATE: / /

मेल-जोल ये मनुष्य की स्वाभाविक वृत्तियाँ हैं। इन्हीं से जीवन में सुख, शान्ति से रहा जा सकता है। इसलिए

अथवा

(४) लिंकन अपने पुत्र को एक निर्भय और सत्यनिष्ठ इंसान बनाना चाहते थे। वे चाहते थे कि उनका पुत्र पसीना बहाकर धन कमाना सीखे। वह हार को झेलना सीखे और जीतने पर उसकी खुशी में फूला न समाए। — उसमें इतना आत्मविश्वास हो कि वह दूसरों की बातों में न आए। वह उस व्यक्ति जैसा बने जो दुःख में भी हँसता है और दूसरों की बातों में आकर अपना मार्ग कभी न छोड़े। लिंकन अपने पुत्र को धैर्यवान, स्वावलंबी, न्यायप्रिय व्यक्ति बनाना चाहते थे।

विभाग - B

(६) कायरता।

* एक-एक वाक्य में लिखिए।

(७) राजकुमारी अमृत कौर

* दो-तीन वाक्यों में उत्तर

(८) लेखक के अनुसार यों तो गांधीजी का बिस्तरा खजूर की चटाई पर एक गद्दा डालकर और उसे खादी से ढककर बनाया गया था, पर उस आदमी में भी वह महान है। वह बड़े-बड़े रत्नजड़ित सिंहासनों से भी बड़ा सिंहासन है। क्योंकि उस बिस्तर को अपने ऊपर उस

PAGE NO.:
DATE: / /

बड़े आदमी, उस महापुरुष को दिनों, महीनों — गौरव प्राप्त हुआ है, जिसके दर्शन को लोग तरसते थे। इसलिए

(९) शरीर पर लगी चोट का प्रभाव उतना कष्टकारी नहीं होता जितना मन पर लगी हुई चोट का। शरीर की चोट इलाज करने पर कुछ समय बाद सूख भी जाती है। मन पर लगी हुई चोट बहुत कष्टकारी होती है। वह जल्दी नहीं भरती। वह जिन्दगी भर सालती रहती है

* पाँच-छह वाक्य में उत्तर

(१) प्रायः कुछ चित्रों, कैलेण्डरों आदि में भारतमाता को दुखी महिला के रूप में दिखाया जाता है। जब देश पराधीन तब भारतमाता को दुखी बेबस नारी के रूप में दिखाया जाता था। वास्तव में भारतमाता तो हमारे देश की वह विशाल जनता है जो हजारों गाँवों और शहरों में रहती है। देश के करोड़ों गरीब किसान और मजदूर भारतमाता के रूप हैं। इनके सुख-दुःख, इनकी गरीबी-अमीरी भारतमाता के सुख-दुःख और गरीबी-अमीरी दर्शाते हैं।

(२) लेखक गांधीजी के जीवित रहते उनके साबरमती आश्रम नहीं आ पाया। वह इसे अपना दुर्भाग्य मानता है। उनके न रहने पर उनकी कुटी में आने पर उसे लगता है कि यदि वह उन दिनों आता तो उनके बिस्तर के निकट इतनी देर तक न बैठ पाता। उस शांत एकांत में उनकी कुटिया से इतना तादात्म्य स्थापित करने का सुख भी उसे न मिल पाता

PAGE NO.:
DATE: / /

उनके पायताने बैठकर वह अपनी लेखनी सार्थकता भी प्रदान न कर पाता। जो तब न मिलता वह आज पाने का अवसर मिलने से लेखक स्वयं को सौभाग्यशाली मानता है"

अथवा

(१०) समय के सतत बहते प्रवाह में क्षण आते और चले जाते हैं। इन क्षणों के साथ हमारी स्मृतियाँ जुड़ी रहती हैं। सुखद स्मृतियाँ क्षणों का श्रृंगार बन जाती हैं, जबकि दुःखद यादें क्षणों का अभिशाप। वे व्यक्ति, वे घटनाएँ और वे परिस्थितियाँ धन्य हैं, जिनकी अमिट छाप क्षणों का श्रृंगार हैं। उनके लिए विस्मृति समय के प्रवाह को रोककर स्वयं द्वारों प्रतीक्षा करती हैं।

विभाग C

* समानार्थी शब्द

(१२) शिष्य
(१३) विरोध, आपत्ति

* विलोम शब्द

(१४) अधीरता
(१५) धूमिल

(१६) संगठन + इत
(१७) स्वर्ग + ईय

* उपसर्ग

(१८) उत् - व्यल
(१९) बं - बस.

* मुहावरे

(२०) संकट पर संकट आना।
(२१) दंड देना

विभाग D

* पत्र लिखिए

(२२)

५, रामनिवास सोसायटी,
नारायण,
वडोदरा - ३९०००७
19 सितम्बर 2021

प्रिय मित्र निकुंज,
सप्रेम नमस्ते
आज सवेरे तुम्हारा पत्र मिला। यह जानकर बहुत खुशी हुई कि तुम्हारे चाचाजी ने मृत्यु के बाद अपनी आँखें दान करने का निर्णय किया है और इसके लिए उन्होंने अस्पतालवालों से आवश्यक बातचीत कर ली है।

निकुंज, यों तो हर तरह का दान प्रसंसनीय होता है, पर चक्षुदान की तो बात ही क्या। इसमें दाता को कुछ खोना नहीं पड़ता, पर लेनेवाले की अँधेरी दुनिया एकाएक रोशन हो जाती है। जरा उस अंधे की पीड़ा तो सोचो जिसने अपने प्रियजनों के चेहरे कभी नहीं देखें, रंग-बिरंगे फूलो से जिसका कभी परिचय नहीं हुआ। — तुम्हारे चाचाजी के चक्षुदान से

PAGE NO. :
DATE : / /

किसी हँसे ही अभागे का भाग्य बदल सकता है। इसलिए तुम्हारे चाचाजी, सचमुच, बधाई के पात्र है।

निस्संदेह नेत्रदान महादान है। इस प्रवृत्ति को अधिक से अधिक प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

परिवार में सबसे मेरा नमस्ते कहना।

तुम्हारा ही,
सचिन

[२३] पुरुषार्थ की महिमा कौन नहीं जानता ? वनों में पशुओं समान बर्बर जीवन बितानेवाले मनुष्य आज सभ्यता और संस्कृति के शिखर पर बैठकर पुरुषार्थ की ही बंसी बजा रहा है।

पुरुषार्थ का अर्थ है बुद्धि द्वारा संचालित परिश्रम अथवा उद्योगशीलता।

बिना पुरुषार्थ के कोई कुछ भी नहीं प्राप्त कर सकता।

पुरुषार्थरहित जीवन भी कोई जीवन है। कहते हैं कि जिंदगी जिंदादिली का नाम है।

अथवा

[२३] चारों ओर प्रदूषण ही प्रदूषण - प्रदूषण के प्रकार - प्रदूषण के कारण - प्रदूषण के दुष्परिणाम - प्रदूषण कम करने के उपाय - संदेश]

अथवा

(२३) शिक्षामंत्री बनना एक सौभाग्य - अच्छी और उपयोगी शिक्षा - उचित माध्यम - पाठ्यपुस्तक एवं परीक्षा प्रणाली में सुधार - अन्य सुधार - मेरा आदर्श।

*

(२४) नदी के पिता एक बहुत ऊँचे पर्वत हैं।
(२५) बचपन में नदी का स्वभाव बहुत चंचल था।
(२६) नदी को इस बात का दुःख है कि लोगों ने कारखानों का कचरा डालकर उसके निर्मल जल को गन्दा कर दिया है।

(२७) नदी